श्रीशिव-पंचाक्षर-नक्षत्र-माला-स्तोत्रम्

(भगवत्पाद-जगद्गुरु-श्रीशङ्कराचार्य-कृतम्)

• अंकुर नागपाल

शिवपंचाक्षरमन्त्र के जप हेतु प्रत्येक साधक को दीक्षा अवश्य लेनी चाहिए : **"दीक्षायुक्तं गुरोर्ग्राह्यं मन्त्रं ह्यथ फलाप्तये"** (शिवपुराण 1/11/40)। भविष्य में सभी लोगों को उक्त मन्त्र की दीक्षा का सौभाग्य नहीं मिलेगा—सम्भवतः यही सोचकर जगद्गुरु भगवान् श्रीशंकराचार्यजी ने 'शिवपंचाक्षर-नक्षत्रमाला-स्तोत्र' की रचना की है। इस स्तोत्र में शिवजी के वेदसम्मत स्वभाव-प्रभाव, कारुण्य-वात्सल्य-आदि दिव्य मंगलमय गुणों तथा जगद्व्यापार-सहित निग्रह-अनुग्रह-आदि की कारणता का विस्तृत उल्लेख किया है। शीर्षक में पठित नक्षत्र-शब्द सत्ताईस संख्या का वाचक है। प्रत्येक श्लोक में चार चरण होते हैं, एतावता 'शिवपंचाक्षरमन्त्र' से गर्भित इस स्तोत्र के सत्ताईस श्लोकों का पाठ करने से शिवजी के पंचाक्षरमन्त्र का [27 × 4 =] 108 बार स्वतः स्मरण हो जाता है। ज्ञान, कर्म एवं उपासना—ये तीन वैदिक काण्ड हैं; जिनमें उपासना चित्त को आत्म/परमात्म-तत्त्व में एकाग्र करने हेतु सर्वथा उपादेय है। प्रस्तुत स्तोत्र के माध्यम से इस उद्देश्य की सफलता सुतरां सिद्ध है। सौभाग्यवश इस वर्ष शृंगेरी, कर्णाटक में लगभग 50,000 शिवभक्तों ने एक-साथ मिलकर इस स्तोत्र का समारोहपूर्वक सामूहिक पाठ किया था। उत्तर भारत में भी यह स्तोत्र प्रचलित हो, इसी भावना के साथ इस स्तोत्र का प्रथम हिन्दी-अनुवाद लोकार्पित किया जा रहा है। साधकों की सुविधा हेतु व्याकरण के नियमों को ध्यान में रखकर अपेक्षित स्थलों पर '-' (निर्देशक-चिह्न) का प्रयोग किया गया है। नारायणस्मृतिः॥

श्रीमदात्मने गुणैक-सिन्धवे नमः शिवाय
धाम-लेश-धूत-कोक-बन्धवे नमः शिवाय।
नाम-शेषिता-नमद्-भवान्धवे नमः शिवाय
पामरेतर-प्रधान-बन्धवे नमः शिवाय॥ 1 ॥

सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सदा पूर्ण रहने वाले; सभी दिव्य गुणों के समुद्र; अपने लेशमात्र प्रकाश से सूर्यदेव को भी कंपाने वाले; नतमस्तक भक्तों के संसार-कूप को नाममात्र तक सीमित करने वाले; पामरों (नास्तिकों) से भिन्न श्रेष्ठ (आस्तिक) लोगों के प्रधान बन्धु; शिवजी! आपको नमस्कार है।

काल-भीत-विप्र-बाल-पाल ते नमः शिवाय
शूल-भिन्न-दुष्ट-दक्ष-फाल ते नमः शिवाय।
मूल-कारणाय काल-काल ते नमः शिवाय
पालयाधुना दयालवाल ते नमः शिवाय॥ 2 ॥

यमराज द्वारा भयभीत ब्राह्मण-बालक (मार्कण्डेय) की रक्षा करने वाले; दुष्ट दक्ष के मस्तक को अपने त्रिशूल से उखाड़ने वाले; सभी कारणों के मूल कारण; काल एवं मृत्यु के भी काल; अपने चारों ओर दया की बाड़ लगाए हुए; शिवजी! आपको नमस्कार है। आप अभी हमारा पालन कीजिए।

इष्ट-वस्तु-मुख्य-दान-हेतवे नमः शिवाय
दुष्ट-दैत्य-वंश-धूम-केतवे नमः शिवाय।
सृष्टि-रक्षणाय धर्म-सेतवे नमः शिवाय
अष्ट-मूर्तये वृषेन्द्र-केतवे नमः शिवाय॥ 3 ॥

इच्छित पदार्थों को देने के मुख्यतः कारण; दुष्ट दैत्यों के वंश हेतु साक्षात् अग्नि; सृष्टि के रक्षक; धर्म की मूर्तिमान् मर्यादा; [आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा एवं जीवात्मा—इन] आठ मूर्त्तियों वाले; वृषभराज नन्दी की ध्वजा वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

आपदद्रि-भेद-टङ्क-हस्त ते नमः शिवाय
पाप-हारि-दिव्य-सिन्धु-मस्त ते नमः शिवाय।
पाप-दारिणे लसन्नमस्तते नमः शिवाय
शाप-दोष-खण्डन-प्रशस्त ते नमः शिवाय॥ 4 ॥

आपत्तियों के पर्वतों को काटने के लिए अपने हाथ में फरसे को रखने वाले; पापहारी दिव्य जलराशि (गंगाजी) को मस्तक पर रखने वाले; पापों का दमन करने वाले; स्तुतियों की शृंखलाओं से सतत सुशोभित; शाप आदि दोषों को नष्ट करने में सर्वथा समर्थ; शिवजी! आपको नमस्कार है।

व्योम-केश दिव्य-भव्य-रूप ते नमः शिवाय
हेम-मेदिनी-धरेन्द्र-चाप ते नमः शिवाय।
नाम-मात्र-दग्ध-सर्व-पाप ते नमः शिवाय
कामनैकतान-हृद्-दुराप ते नमः शिवाय॥ 5 ॥

आकाश तक फैले हुए लम्बे केशों वाले, अथवा आकाश को ही अपने केश बनाने वाले [= मुण्डित रहने वाले]; दिव्य एवं भव्य रूप वाले; सुवर्णमय सुमेरु पर्वत को अपना धनुष बनाने बाले; अपने नाम से ही सभी पापों को जलाने वाले; केवल वासना से परिपूर्ण हृदय वालों के लिए सर्वथा अप्राप्य; शिवजी! आपको नमस्कार है।

ब्रह्म-मस्तकावली-निबद्ध ते नमः शिवाय
जिह्मगेन्द्र-कुण्डल-प्रसिद्ध ते नमः शिवाय।
ब्रह्मणे प्रणीत-वेद-पद्धते नमः शिवाय
जिह्म-काल-देह-दत्त-पद्धते नमः शिवाय॥ 6 ॥

ब्रह्माजी के मस्तकों की माला में बँधे हुए; अपने सर्पमय कुण्डलों के कारण सर्वत्र प्रसिद्ध; ब्रह्माजी के प्रति वेद की मर्यादा को स्थापित करने वाले; यमराज को भी अपने चरण-प्रहार द्वारा दूर करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

काम-नाशनाय शुद्ध-कर्मणे नमः शिवाय
साम-गान-जायमान-शर्मणे नमः शिवाय।
हेम-कान्ति-चाकचक्य-वर्मणे नमः शिवाय
सामजासुराङ्ग-लब्ध-चर्मणे नमः शिवाय॥ 7 ॥

कामदेव का नाश करने वाले; शुद्ध कर्मों को करने वाले; सामवेद के गान से सुखी होने वाले; स्वर्णिम कान्ति से चमचमाते हुए अंगों वाले; गजासुर के शरीर से चर्म को प्राप्त करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

जन्म–मृत्यु–घोर–दुःख–हारिणे नमः शिवाय
चिन्मयैक–रूप–देह–धारिणे नमः शिवाय।
मन्मनो–रथावपूर्ति–कारिणे नमः शिवाय
सन्मनोगताय काम–वैरिणे नमः शिवाय।। 8 ।।

जन्म और मृत्यु के घोर दुःखों का हरण करने वाले; एकमात्र चिन्मय [अर्थात् मायाविकार से रहित] देह को धारण करने वाले; मेरे मनोरथों की पूर्ति करने वाले; सज्जनों के मनों में बसने वाले; कामदेव के वैरी; शिवजी! आपको नमस्कार है।

यक्षराज–बन्धवे दयालवे नमः शिवाय
दक्ष–पाणि–शोभि–काञ्चनालवे नमः शिवाय।
पक्षि–राज–वाह–हृच्छ–यालवे नमः शिवाय
अक्षि–फाल वेद–पूत–तालवे नमः शिवाय।। 9 ।।

यक्षराज कुबेर के मित्र; दयालु स्वभाव वाले; अपने दाहिने हाथ को स्वर्णिम अग्नि द्वारा शोभायमान रखने वाले; गरुडवाहन भगवान् विष्णु के हृदय में विश्राम करने वाले; माथे पर नेत्र वाले; वेदोच्चारण से अपनी जिह्वा को पवित्र रखने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

दक्ष–हस्त–निष्ठ–जात–वेदसे नमः शिवाय
अक्षरात्मने नमद्–विडौजसे नमः शिवाय।
दीक्षित–प्रकाशितात्म–तेजसे नमः शिवाय
उक्ष–राज–वाह ते सतां गते नमः शिवाय।। 10 ।।

दाहिने हाथ में अग्नि को रखने वाले; जिनका स्वरूप कभी नष्ट नहीं होता; इन्द्र द्वारा नमस्कृत; व्रतनिष्ठ साधकों के प्रति अपने अमित तेज को प्रकाशित करने वाले; वृषराज नन्दी को अपना वाहन बनाने वाले; सज्जनों की अन्तिम गति; शिवजी! आपको नमस्कार है।

राजताचलेन्द्र–सानु–वासिने नमः शिवाय
राजमान–नित्य–मन्द–हासिने नमः शिवाय।
राज–कोरकावतंस–भासिने नमः शिवाय
राज–राज–मित्रता–प्रकाशिने नमः शिवाय।। 11 ।।

पर्वतराज कैलास पर सर्वदा विराजमान; मुख पर सदा मन्द मुस्कान को रखने वाले; मस्तक पर प्रकाशमान चन्द्रमा को सदैव विराजित करने वाले; राजराजेश्वर कुबेर से अपनी मित्रता को दिखलाने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

दीन–मान–वालि–काम–धेनवे नमः शिवाय
सून–बाण–दाहकृत्–कृशानवे नमः शिवाय।
स्वानुराग–भक्त–रत्न–सानवे नमः शिवाय
दानवान्ध–कार–चण्ड–भानवे नमः शिवाय।। 12 ।।

दीन लोगों को कामधेनु के समान मानित करने वाले; पाँच बाणों वाले कामदेव को जलाने हेतु साक्षात् अग्निस्वरूप; अपने अनुराग से भक्त के प्रति रत्नगर्भ पर्वत बनने वाले; दानवरूपी अन्धकार को नष्ट करने वाले प्रचण्ड सूर्य; शिवजी! आपको नमस्कार है।

सर्व–मङ्गला–कुचाग्र–शायिने नमः शिवाय
सर्व–देवता–गणाति–शायिने नमः शिवाय।
पूर्वदेव–नाश–संविधायिने नमः शिवाय
सर्वमन्–मनोज–भंग–दायिने नमः शिवाय।। 13 ।।

सबका मंगल करने वाली माता पार्वती के वक्षःस्थल पर विश्राम करने वाले; सभी देवता समूहों से अधिक बलवान्; दैत्यों का नाश करने वाले; मेरे मन की सभी वासनाओं को शान्त करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

स्तोक–भक्तितोऽपि भक्त–पोषिणे नमः शिवाय
माकरन्द–सारवर्षि–भाषिणे नमः शिवाय।
एक–बिल्व–दानतोऽपि तोषिणे नमः शिवाय
नैक–जन्म–पाप–जाल–शोषिणे नमः शिवाय।। 14 ।।

थोड़ी भक्ति से भी अपने भक्त का पोषण करने वाले; मधु के समान मीठी भाषा बोलने वाले; एक बिल्वपत्र के चढ़ाने से ही सन्तुष्ट हो जाने वाले; अनेक जन्मों के पापसमूह का शोषण करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

सर्व–जीव–रक्षणैक–शीलिने नमः शिवाय
पार्वती–प्रियाय भक्त–पालिने नमः शिवाय।
दुर्वि–दग्ध–दैत्य–सैन्य–दारिणे नमः शिवाय
शर्वरीश–धारिणे कपालिने नमः शिवाय।। 15 ।।

सभी प्राणियों की रक्षा का ही स्वभाव रखने वाले; देवी पार्वती के प्रियतम; भक्तों के पालक, दैत्यसेना को आधा जलाकर नष्ट करने वाले; रात्रिनाथ चन्द्रमा को [मस्तक पर] धारण करने वाले; कपालधारी; शिवजी! आपको नमस्कार है।

पाहि मामुमा–मनोज्ञ–देह ते नमः शिवाय
देहि मे वरं सिताद्रि–गेह ते नमः शिवाय।
मोहितर्षि–कामिनी–समूह ते नमः शिवाय
स्वे–हित–प्रसन्न काम–दोह ते नमः शिवाय।। 16 ।।

उमादेवी के प्रति रुचिर देह को रखने वाले; श्वेत/हिमाच्छादित पर्वतों पर निवास करने वाले; ऋषियों की पत्नियों के समूह को मोहित करने वाले; आपकी इच्छा रखने वाले पर प्रसन्न रहने वाले; कामदेव का दोहन करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है। मेरी रक्षा कीजिए, मुझे वरदान दीजिए।

मङ्गल–प्रदाय गो–तुरङ्ग ते नमः शिवाय
गङ्गया तरङ्गितोत्तमाङ्ग ते नमः शिवाय।
सङ्गर–प्रवृत्त–वैरि–भङ्ग ते नमः शिवाय
अङ्ग–जारये करे–कुरंग ते नमः शिवाय।। 17 ।।

सभी मंगलों के प्रदाता; गऊ–नन्दी को वाहन बनाने वाले; गंगाजी के द्वारा तरंगित उत्तम अंग [= शिर] वाले; युद्ध करने वाले शत्रुओं को नष्ट करने वाले; कामदेव के शत्रु; मृगमुद्रा को हाथ में धारण करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

ईहित–क्षण–प्रदान–हेतवे नमः शिवाय
आहिताग्नि–पालकोक्ष–केतवे नमः शिवाय।
देह–कान्ति–धूत–रौप्य–धातवे नमः शिवाय
गेह–दुःख–पुंज–धूम–केतवे नमः शिवाय।। 18 ।।

क्षणमात्र में इच्छित पदार्थ को प्रदान करने वाले; यज्ञाग्नि के पालक; वृषध्वज; अपनी देह की कान्ति से चाँदी को भी पछाड़ने वाले; घरेलू दुःखों के समूह को जलाने वाले अग्निस्वरूप; शिवजी! आपको नमस्कार है।

त्र्यक्ष दीन–सत्कृपा–कटाक्ष ते नमः शिवाय
दक्ष–सप्न–तन्तु–नाश–दक्ष ते नमः शिवाय।
ऋक्ष–राज–भानु–पावकाक्ष ते नमः शिवाय
रक्ष मां प्रपन्न–मात्र–रक्ष ते नमः शिवाय।। 19 ।।

तीन नेत्रों वाले; दीन सज्जनों पर अपने कृपापूर्ण कटाक्ष करने वाले; प्रजापति दक्ष के यज्ञ का नाश करने में दक्ष एवं कुशल; चन्द्र, सूर्य एवं अग्नि को अपने नेत्र बनाने वाले; प्रत्येक शरणागत की रक्षा करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है। मेरी रक्षा कीजिए।

न्यङ्कु–पाणये शिवङ्कराय ते नमः शिवाय
सङ्कटाब्धि–तीर्ण–किङ्कराय ते नमः शिवाय।
कङ्क–भीषिता–भयङ्कराय ते नमः शिवाय
पङ्कजाननाय शंकराय ते नमः शिवाय।। 20 ।।

हाथ में मृग को धारण करने वाले; सभी का कल्याण करने वाले; अपने सेवक को संकट–समुद्र के पार उतारने वाले; क्रूरतम यमदूतों से [अपने भक्त को] अभय करने वाले; कमल के समान सुन्दर मुख वाले; मंगलकारी; शिवजी! आपको नमस्कार है।

कर्म–पाश–नाश नील–कण्ठ ते नमः शिवाय
शर्म–दाय वर्य–भस्म–कण्ठ ते नमः शिवाय।
निर्ममर्षि–सेवितोप–कण्ठ ते नमः शिवाय
कुर्महे नतीर्नमद्–विकुण्ठ ते नमः शिवाय।। 21 ।।

कर्मपाश का नाश करने वाले; नीलकण्ठ; सुखदाता; श्रेष्ठ भस्म को अपने कण्ठ में मलने वाले; अपने निकट रहने वाले निर्मोही महर्षियों द्वारा सेवित; नमस्कार करने वालों को कुण्ठाओं से रहित करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है। हम सभी आपके प्रति नमस्कार करते हैं।

विष्टपाधिपाय नम्र–विष्णवे नमः शिवाय
शिष्ट–विप्र–हृद्–गुहा–चरिष्णवे नमः शिवाय।
इष्ट–वस्तु–नित्य–तुष्ट–जिष्णवे नमः शिवाय
कष्ट–नाशनाय लोक–जिष्णवे नमः शिवाय।। 22 ।।

समस्त लोकों के स्वामी; जिनके समक्ष भगवान् विष्णु भी नम्र रहते हैं; शिष्ट एवं शास्त्रनिष्ठ ब्राह्मणों की हृदय गुफा में घूमने वाले; इष्ट वस्तु प्रदान करके

जिष्णु [= विष्णु, इन्द्र और अर्जुन] को भी सदा–सर्वदा के लिए सन्तुष्ट करने वाले; सभी कष्टों के नाशक; सभी लोकों के राजा; शिवजी! आपको नमस्कार है।

अप्रमेय–दिव्य–सुप्रभाव ते नमः शिवाय
सत्–प्रपन्न–रक्षण–स्वभाव ते नमः शिवाय।
स्व–प्रकाश निस्तुलानुभाव ते नमः शिवाय
विप्र–डिम्भ–दर्शितार्द्र–भाव ते नमः शिवाय।। 23 ।।

अतुलनीय दिव्य एवं सुन्दर प्रभाव वाले; शरणागत सज्जनों की रक्षा का स्वभाव रखने वाले; निरपेक्ष रूप से स्वयं ही सर्वत्र प्रकाशित होने वाले; असीम प्रभाव वाले; ब्राह्मण–बालक (उपमन्यु) पर दया दिखलाने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

सेवकाय मे मृड प्रसीद ते नमः शिवाय
भाव–लभ्य–तावक–प्रसाद ते नमः शिवाय।
पावकाक्ष देव–पूज्य–पाद ते नमः शिवाय
तावकाङ्घ्रि–भक्त–दत्त–मोद ते नमः शिवाय।। 24 ।।

हे मृड [= सभी को हर्षित करने वाले]! मुझ सेवक पर प्रसन्न होइए। केवल भक्तिभाव से ही अपनी प्रसन्नता को दिखलाने वाले; अग्नि को अपना नेत्र बनाने वाले; देवताओं के द्वारा पूजित चरणों वाले; अपने चरणकमलों की भक्ति देकर भक्त को प्रमुदित करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

भुक्ति–मुक्ति–दिव्य–भोग–दायिने नमः शिवाय
शक्ति–कल्पित–प्रपञ्च–भागिने नमः शिवाय।
भक्त–सङ्कटा–पहार–योगिने नमः शिवाय
युक्त–सन्मनः–सरोज–योगिने नमः शिवाय।। 25 ।।

लौकिक भोग, मोक्ष एवं दिव्य [= स्वर्ग आदि के पारलौकिक] भोगों को देने वाले; अपनी लीला–शक्ति से इस प्रपंच की कल्पना करके उसमें भाग लेने वाले; भक्तों के संकटों का अपहरण करने वाले योगी; सदाचारी सज्जनों के हृदय–कमल में निवास करने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

अन्तकान्तकाय पाप–हारिणे नमः शिवाय
शन्तमाय दन्ति–चर्म–धारिणे नमः शिवाय।
सन्ततााश्रित–व्यथा–विदारिणे नमः शिवाय
जन्तु–जात–नित्य–सौख्य–कारिणे नमः शिवाय।। 26 ।।

मृत्यु का भी अन्त करने वाले; पापों को हरने वाले; अज्ञान का शमन करने वाले; गजचर्म को धारण करने वाले; आश्रितों की व्यथा को सदा दूर करने वाले; सभी जीव जन्तुओं को नित्य सुख देने वाले; शिवजी! आपको नमस्कार है।

शूलिने नमो नमः कपालिने नमः शिवाय
पालिने विरिञ्चि–मुण्ड–मालिने नमः शिवाय।
लीलिने विशेष–रुण्ड–मालिने नमः शिवाय
शीलिने नमः प्रपुण्य–शालिने नमः शिवाय।। 27 ।।

त्रिशूल एवं कपाल को धारण करने वाले; सबका पालन करने वाले; ब्रह्माजी के मुण्डों की माला को धारण करने वाले; सबको अपने में लीन करने वाले; विभिन्न प्रकार के मुण्डों की मालाओं को पहनने वाले; अच्छे स्वभाव वाले; महान् पुण्यशाली; शिवजी! आपको नमस्कार है।

शिव–पञ्चाक्षर–मुद्रा–चतुष्पदोल्लास–पद्य–मणि–घटिताम्।
नक्षत्र–मालिकामिह दधदुप–कण्ठं नरो भवेत् सोमः।। 28 ।।

'शिवपंचाक्षर मन्त्र' (नमः शिवाय) की मुद्रा से उल्लसित चार–चार चरणों वाले पद्यों की मणियों से बनी इस 'नक्षत्र–मालिका' [सत्ताईस श्लोकों वाली] स्तुति को अपने कण्ठ में धारण करने वाला मनुष्य साक्षात् शिवस्वरूप हो जाएगा।

।। इति भगवत्पाद–जगद्गुरु–श्रीशङ्कराचार्य–कृतं
श्रीशिव–पञ्चाक्षर–नक्षत्रमाला–स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

मूलपाठ–सन्दर्भ : 'शाङ्कर–स्तोत्राणि' (पृष्ठ 128–132), वेदान्त–भारती (मैसूरू), 2017 ई. •